पाठ 4

बहता पानी निर्मला

मुझे बचपन से नक्शे देखने का शौक है। आप समझेंगे कि कुछ भूगोल विज्ञान की तरफ प्रवृत्ति होगी-नहीं, सो बात नहीं; असल बात यह है कि नक्शों के सहारे दूर-दुनिया की सैर का मजा लिया जा सकता है। यों तो वास्तविक जीवन मंे भी काफी घूमा-भटका हूँ, पर उससे कभी तृप्ति नहीं हुई, हमेशा मन मंे यही रहा कि कहीं और चलें, कोई नयी जगह देखें।

यात्रा करने के कई तरीके हैं। एक तो यह कि आप सोच-विचार कर निश्चय कर लें कि कहाँ जाना है, कब जाना है, कहाँ-कहाँ घूमना है, कितना खर्च होगाः फिर उसी के अनुसार छुट्टी लीजिए, टिकट कटवाइए, सीट या बर्थ बुक कीजिए, होटल डाॅक बँगले को सूचना देकर रिजर्व कराइए या भावी अतिथियों को खबर दीजिए और तब चल पड़िए। बल्कि तरीका तो यही एक है-क्योंकि यह व्यवस्थित तरीका है और इसमंे मजा बिल्कुल नहीं है यह भी नहीं कहा जा सकता, क्योंकि बहुत से लोग ऐसे यात्रा करते हैं और बड़े उत्साह से भरे वापस आते हैं।

दूसरा तरीका यह है कि आप इरादा तो कीजिए कहीं जाने का, छुट्टी भी लीजिए, इरादा और पूरी योजना भी चाहे घोषित कर दीजिए कि आप बड़े दिनों की छुट्टियों मंे बम्बई जा रहे हैं, लोगों को ईष्र्या से कहने दीजिए कि अमुक बम्बई का सीजन देखने जा रहा है, मगर चुपके से पैक कर लीजिए जबरदस्त गर्म कपड़े और जा निकलिए बर्फ से ढँके श्रीनगर में!

अंग्रेजी में कहावत है कि ''एक कील की वजह से राज्य खो जाता है-वह यों कि कील की वजह से नाल, नाल की वजह से घोड़ा, घोड़े के कारण लड़ाई और लड़ाई के कारण राज्य से हाथ धोना पड़ता है।'' हमारे पास छिनने को राज्य तो था नहीं पर एक दाँत माँजने के ब्रुश और मोटर की एक मामूली-सी ढिबरी के लिए हम कैसी मुसीबत में पड़े यह हमीं जानते हैं।

सोनारी एक छोटा-सा गाँव है-अहोम राजाओं की पुरानी राजधानी शिवसागर से कोई अठारह मील दूर। बरसात के दिन थे, रास्ता, खराब एक दिन सबेरे घूमने निकला तो देखा कि नदी बढ़ कर सड़क के बराबर आ गयी है। मैं शिवसागर से तीन-चार मील पर था, सोचा कि एक नया दाँत बुरश ले लूँ क्योंकि पुराना घिस चला था; और मोटर की भी एक ढिबरी ठीक करवा कर ही लौटूँ-उसकी चूड़ी घिस जाने से थोड़ा-थोड़ा तेल चूता रहता था, वैसे कोई बहुत जरूरी काम नहीं था। खैर, इसमें कोई दो घण्टे लग गये, खाना खाने में एक घण्टा और।

तीन घण्टे बाद वापस लौटने लगे तो देखा, सड़क पर पानी फैल गया है। पानी बड़े जोर से एक तरफ से दूसरी तरफ बह रहा था, क्योंकि सड़क के एक तरफ नदी थी, दूसरी तरफ नीची सतह के धान के खेत, जिनकी ओर पानी बढ़ रहा था। पानी के धक्के से सड़क कई जगह टूट गयी थी। मैं फिर भी बढ़ता गया, क्योंकि आखिर पीछे भी तो पानी ही था।

तीन घंटे बाद वापस लौटने लगे तो देखा, सड़क पर पानी फ़ैल गया है |पानी बड़े जोर से एक तरफ से दूसरी तरफ बह रहा था, क्योंकि सड़क के एक तरफ नदी थी, दूसरी तरफ नीची सतह के धान के खेत, जिनकी ओर पानी बढ़ रहा था |पानी के धक्के से सड़क कई जगह टूट गयी थी | मैं फिर भी बढ़ता गया, क्योंकि आखिर पीछे भी तो पानी ही था | पर थोड़ी देर बाद पानी कुछ और गहरा हो गया और उसके धक्के से मोटर भी सड़क पर से हट कर किनारे की ओर जाने लगी। आगे कहीं कुछ दीखता नहीं था क्योंकि सड़क की सतह शायद दो-तीन मील आगे तक बहुत नीची ही थी। सड़क के दोनों ओर जो पेड़ थे उन में कइयों पर साँप लटक रहे थे, क्योंकि बाढ़ से बचने के लिए वे पहले सड़क पर आते थे और फिर पेड़ों पर चढ़ जाते थे।

मैंने लौटने का ही निश्चय किया। पर सड़क दीखती तो थी नहीं, अन्दाज से ही मैं बीच के पक्के हिस्से पर गाड़ी चला रहा था। मोड़ने के लिए उसे पटरी से उतारना पड़ेगा और इधर-उधर सड़क है भी कि नहीं, क्या भरोसा ? और मैं एक जगह देख भी चुका था कि आँखों के सामने ही कैसे समूचा ट्रक दलदल में धँस कर गायब हो जाता है। इसलिए मोटर को बिना घुमाये उलटे गियर मंे ही कोई ढाई मील तक लाया, यहाँ सड़क कुछ ऊँची थी, उस पर गाड़ी घुमाकर शिवसागर पहुँचा।

शिवसागर से सोनारी को एक दूसरी सड़क भी जाती थी चाय बागानों में से होकर, यह सड़क अच्छी थी पर इसके बीच एक नदी पड़ती थी जिसे नाव से पार करना होता था। मैंने सोचा कि इसी रास्ते चलंे, क्योंकि सामान तो सब सोनारी में था। मैं डाॅक बँगले से कुछ घंटों के लिए ही तो निकला था। शिवसागर में एक तो मोटर की ढिबरी कसवानी थी और दूसरे दाँत-बुरश और कुछ तेल साबुन लेना था, बस। वह भी लौटने की जल्दी के कारण नहीं लिया था!

इस सड़क से नदी तक तो पहुँच गये। नदी मंे नाव पर गाड़ी लाद भी ली और पार भी चले गये। यहाँ भी नदी मंे बड़ी बाढ़ आयी थी और बहते हुए टूटे छप्पर बता रहे थे कि नदी किसी गाँव को लीलती हुई आयी है-एक भैंस भी बहती आयी और पेड़-पौधों की तो गिनती क्या। उस पार नदी का कगारा ऊँचा था मोटर के लिए उतारा बना हुआ था। लेकिन नाव से किनारे तक जो तख्ते डाले गये थे वह ठीक नहीं लगे थे। मोटर नीचे गिरी आधी पानी में, आधी किनारे पर मैं जोर से ब्रेक दबाये बैठा था पर ऐसे अधिक देर तक तो नहीं चल सकता था ! खैर, आधे घण्टा उस स्वर्गनसैनी पर बैठे-बैठे, असमिया हिन्दी और बंगला की खिचड़ी में लोगों को बताता रहा कि क्या करें, तब मोटर ऊपर चढ़ायी जा सकी। थोड़ा आगे ही ऊँची जगह गाँव था, पर मोटर रोक कर चाय की तलाश की। यहीं सोनारी से आये दो साइकिल-सवारों से मालूम हुआ कि वे कन्धे तक पानी में से निकल कर आये हैं-साइकिलें कन्धों पर उठाकर! और मोटर तो कदापि नहीं जा सकती।

इस तरह इधर भी निराशा थी। पानी अभी बढ़ रहा था, यह गाँव ऊँची जगह पर था पर यहाँ कैद हो जाना मैं नहीं चाहता था, इसलिए फिर नाव पर मोटर चढ़ा कर उसी रास्ते नदी पार की। सब ने मना किया पर मेरे सर पर भूत सवार था, और हठधर्मी का अपना अनूठा रस होता है।

रात शिवसागर पहुँचे। एक सज्जन ने ठहरने को जगह दी, भोजन-बिस्तर का प्रबन्ध भी हो गया पर मन ही मन अपने को कोसा कि न नया दाँत-ब्रुश लेने के लिए सोनारी निकले होते, न यह मुसीबत होती-क्योंकि इसकी ऐसी तात्कालिक जरूरत तो भी नहीं, न मोटर की ढिबरी का मामला ही इतना जरूरी था। लेकिन अब उपाय क्या था ?

इस तरह बारह दिन और काटने पड़े, क्योंकि सोनारी के सब रास्ते बन्द थे। लौटकर देखा, सोनारी के डाकॅबँगले में भी पानी भर गया था, कपड़े सब सील कर सड़ रहे थे,किताबें तो गल ही गयी थीं। बचा था तो केवल स्नानघर में ऊँचे ताक पर रखा हुआ साबुन का डिब्बा और दाँतों का ब्रुश।

नक्शे में अब भी देखता हूँ। वास्तव में जितनी यात्राएँ स्थूल पैरों से करता हूँ उससे ज्यादा कल्पना के चरणों से करता हूँ। लोग कहते हैं कि मैंने अपने जीवन का कुछ नहीं बनाया, मगर मैं बहुत प्रसन्न हूँ और किसी से ईष्र्या नहीं करता। आप भी अगर इतने खुश हों तो ठीक-तो शायद आप पहले से मेरा नुस्खा जानते हैं-नहीं तो मेरी आप को सलाह है, ''जनाब अपना बोरिया-बिस्तर समेटिए और जरा चलते-फिरते नजर आइये।'' यह आप का अपमान नहीं है, एक जीवन दर्शन का निचोड़ है। 'रमता राम' इसीलिए कहते हैं कि जो रमता नहीं, वह राम नहीं। टिकना तो मौत है।

-

हीरानन्द सच्चिदानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय'

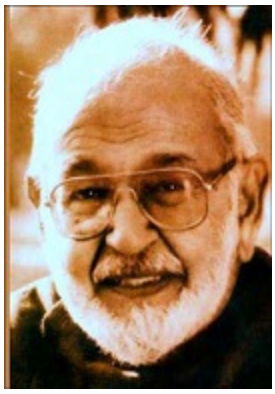

सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' का जन्म 7 मार्च सन् 1911 ई0 को कुशीनगर जनपद में हुआ था। आपको हिन्दी साहित्य में प्रयोगवाद के जनक के रूप में ख्याति प्राप्त है। 'बावरा अहेरी', 'आँगन के पार द्वारा', 'कितनी नावों में कितनी बार', 'शेखरः एक जीवनी' इनकी प्रसिद्ध रचनाएं हैं। इनका निधन 4 अप्रैल सन् 1987 ई0 को हुआ।

शब्दार्थ

तृप्ति = सन्तोष, इच्छित वस्तु की प्राप्ति से मन का भरना। **अमुक** = कोई खास। **ढिबरी** = कसे जाने वाले पेंच के सिरे पर लगा छल्ला। **कगारा** = नदी का करार। **टीला**= ऊँचा किनारा। **हठधर्मी** = जिद्दी, दृढ़ संकल्पित। **तात्कालिक** = उसी समय।

प्रश्न अभ्यास

कुछ करने को

1-यदि आपने बस/रेलगाड़ी से कोई यात्रा की हो तो यात्रा मंे लिये गये टिकट पर दी गयीजानकारी तथा निदर्श को लिखें।

2-"मैंने लौटने का निश्चय किया पर सड़क दिखती तो थी नहीं, अन्दाज से ही मैं बीच के पक्के हिस्से पर गाड़ी चला रहा था। मोड़ने के लिए उसे पटरी से उतारना पड़ेगा-और इधर-उधर सड़क है भी कि नहीं क्या भरोसा ? और मैं एक जगह देख भी चुका था कि

आँखों के सामने ही कैसे समूचा ट्रक दलदल में धंसकर गायब हो जाता है। इसलिए मोटर को बिना घुमाये उलटे गियर में ही कोई ढाई मील तक लाया। यहाँ सड़क कुछ ऊँची थी, उस पर गाड़ी घुमाकर शिवसागर पहुँचा।''

उपर्युक्त अनुच्छेद को पढ़कर अपने सहपाठियों से पूछने के लिए चार प्रश्न बनाइए।

विचार और कल्पना

1- आपने भी कोई न कोई यात्रा जरूर की होगी। उस यात्रा में कई प्रकार की समस्याएं आयी होंगी। उन समस्याओं का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

2- आठ घण्टा उस स्वर्गनसैनी पर बैठे-बैठे, असमिया, हिन्दी और बंगला की खिचड़ी में लोगों को बताता रहा कि क्या करें'' इन परिस्थितियों में लेखक के मन में क्या-क्या भाव उत्पन्न हुए होंगे ? स्वयं को उस स्थान पर रखते हुए लिखिए।

यात्रावृत्त से

1- लेखक ने यात्रा करने के कितने प्रकार बताए हैं और उन्होंने किस प्रकार की यात्रा की ?

2- लेखक ने किन स्थानों की यात्रा की ?

3- लेखक ने अपनी यात्रा में किस प्रकार की कठिनाइयों का सामना किया ?

4-'वास्तव में जितनी यात्राएं स्थूल पैरों से करता हूँ उससे ज्यादा कल्पना के चरणों से करता हूँ' इस वाक्य से लेखक का क्या अभिप्राय है ?

5-'एक कील की वजह से राज्य खो जाता है' कहावत को लेखक ने किस सन्दर्भ में कहा ?

6-यात्रा करने में हमें नक्शा किस प्रकार सहायता करता है ?

भाषा की बात

1-पाठ में आये अंग्रेजी के शब्दों को छाँटिए और उनके हिन्दी अर्थ ढूँढ़कर लिखिए ?

2-'एक कील की वजह से राज्य खो जाता है' यह एक कहावत है। ऐसी ही कहावतों को खोजिए और उनका अर्थ लिखिए ?

3-जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम के साथ लगकर संबंध वाक्य के अन्य शब्दों के साथ जुड़ते हैं उन्हें सम्बन्ध बोधक कहा जाता है। कुछ प्रमुख **सम्बन्ध बोधक** हैं-का, के, की ,के लिए, के कारण, के अनुसार, की ओर। उचित सम्बन्ध बोधक शब्दों का प्रयोग करते हुए निम्नलिखित वाक्यों को पूरा कीजिए-

(क) उसी .....छुट्टी लीजिए और टिकट करवाइए।

(ख) लड़ाई .....राज्य से हाथ धोना पड़ता है।

(ग) एक मामूली सी ढिबरी.....हम कैसी मुसीबत में पड़े।

(घ) नदी बढ़कर सड़क .....आ गई।

(ड.) सड़क पर से हटकर किनारे.....जाने लगे।